९१. ज्ञानावस्था नैसर्गिक है

१३.०७.२०१३

नैसर्गिकता का मतलब सह-अस्तित्व सहज विकास क्रम –विकास, जागृति क्रम-जागृति के रूप में होने से है | नियति विधि यही है | नियति का तात्पर्य निश्चित रूप में होने वाली कार्यक्रम | पदार्थावस्था, प्राणावस्था, जीवावस्था निश्चित है | आचरण रूप में निश्चित है | कार्य रूप में निश्चित है | व्यवस्था रूप में निश्चित है | मानव ही अभी तक निश्चित नहीं हो पाया- आचरण रूप में, व्यवहार रूप में, कार्य रूप में निश्चित नहीं हो पाया | मानव का इतिहास समुदाय के रूप में हुआ | समुदायों का स्वरूप मनमानी रहा है | मानव का निश्चित स्वरूप सार्वभौम व्यवस्था, अखण्ड समाज, समाधान, समृद्धि सम्पन्न परिवार परम्परा ही है | इस प्रकार चार प्रकार की उपलब्धियां मानव परम्परा में प्रमाणित होना ही जागृति है, अन्यथा भ्रम ही है | भ्रम ही व्यक्तिवाद, समुदायवाद के रूप में होता है | अभी तक मानव जात समुदाय के रूप में जिया है | हर समुदाय में ज्ञानी, विज्ञानी, अज्ञानी सब हो गये हैं | इन तीनों प्रकार का आदमी होते हुए ज्ञान का पता नहीं, प्रयोजन का पता नहीं, समाधान का पता नहीं, अखण्डता, सार्वभौमता का पता नहीं | अखण्डता, सार्वभौमता ही व्यवहार और व्यवसाय का आधार है | अखण्डता के लिये व्यवहार आवश्यक है | सार्वभौमता के लिये व्यवस्था आवश्यक है | इन दोनों प्रकार के कार्यक्रम में पिछड़ा हुआ आदमी जात के पास अखण्डता का सूत्र व्याख्या नहीं है | सार्वभौमता का व्याख्या, सूत्र व्यवस्था के लिये नहीं हुआ | इन दोनों चीजों को विकल्प के रूप में प्रस्तुत किया है | मैंने प्रस्तुत किया है | मानव का पुण्य से प्राप्त हुआ, ऐसा मानते हुए मानव के लिये अर्पित कर दिया |

विकल्प की उपलब्धि से हमको कोई सुविधा संग्रह को निर्मित नहीं करना | हमारा चूल्हा चौके के पास इसका एक कौड़ी भी नहीं आता | निष्प्रह सेवा के रूप में मानव का पुण्य से ही हमको प्राप्त हुआ, मानव को अर्पित कर दिया | इसका व्यवस्था अछोटी में किया है | अछोटी में या इसमें जो पैसा मिलता है, अछोटी के कार्यक्रम में जाता है | अछोटी एक प्रकार से विकल्प का सूचना, अध्ययन ही है | विकल्प ही अखण्डता, सार्वभौमता को प्रतिपादित करता है | मानव का अखण्डता के आधार पर मानव जाति को प्रतिपादित किया है | सार्वभौम व्यवस्था के रूप में व्यवस्था को प्रतिपादित किया | ये दोनों बात समझ में आने से परिवार में समाधान, समृद्धि सम्पन्न होता है | इस प्रकार समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व रूप में जीना ही जागृति का प्रमाण है | जागृत चेतना ही विकसित चेतना है जिसका क्रम मानव, देव मानव, दिव्य मानव के रूप में दिया है | मानव तीनों स्थिति में है | इसीलिये विकसित चेतना विधि से जीना ही समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व है | समाधानपूर्वक जीने से चारों अवस्था के साथ संतुलन होना स्वाभाविक है | संतुलन के आधार पर ही सार्वभौम व्यवस्था प्रतिपादित होता है |

हर व्यक्ति में प्रतिपादन क्षमता समायी है | प्रतिपादन ही जीने की कला है | जीने की विधि व्यवस्था को प्रतिपादन कहा है | यह विकल्प विधि से आता है | विकल्प विधि से ही अखण्डता, सार्वभौमता दोनों प्रमाणित करते हैं | इस विधि से मानव, मानवीयता का प्रमाण सदा-सदा के लिये परम्परा में प्रतिपादित कर सकता है | यही विश्व शांति का आधार है न कि फिजन-फ्यूजन | फिजन-फ्यूजन में संख्यात्मक गणित का प्रयोग है | परमाणु में विकार पैदा किये बिना फिजन-फ्यूजन होता

नहीं | परमाणु में विकार पैदा करना ही इन दोनों प्रकार की सामरिक प्रयोजन को सिद्ध करने की व्यवस्था है | सामरिक प्रयास हजारों वर्षों से चलते हुए अभी भी ज़िंदा है | सामरिक प्रयास ही सर्वाधिक अपराध का कारण है | अर्थात मानव जात ही एक दूसरे के साथ दुश्मनी मानता है | सीमा सुरक्षा रेखा में इसको भले प्रकार से देखा जा सकता है | हर व्यक्ति को यह समझ में आता है | मानव जाति ही परम्परा में शत्रुता को धरती के आधार पर स्वीकारा है | इसमें ज्ञानी, विज्ञानी, अज्ञानी तीनों सहमत हैं | इस विधि से चलता हुआ आदमी कहाँ पहुंचा है? ठौर कहाँ है? समुदाय चेतना का प्रोत्साहन, समुदाय चेतना को बनाए रखने के लिये अपराध को वैध मानना अभी तक बना है | ये कब तक चलेगा? अपराध करते-करते अर्थात परमाणु के साथ खिलवाड़ करते –करते धरती मानव के रहने योग्य नहीं रह गया |

इसको विज्ञान ही कह रहा है | विज्ञान कहा है- स्पेस पर घर बनाएंगे | गाँव बना लेंगे, खाना कहाँ से आएगा? खाने को पैदा करने के लिये धरती ही एकमात्र आधार है | चाहे शाकाहार हो या मांसाहार हो, दोनों प्रकार का आहार पद्धति मानव परम्परा में ही पनपा है | कुत्ते, बिल्ली जैसे जानवरों में भी पनपा है | बाघ में, गाय में नहीं पनपा | इस प्रकार से मानव का अध्ययन करने पर पता लगता है कि मानव अभी तक किसी सही निष्कर्ष पर नहीं पहुंचा है | सही निष्कर्ष आए बिना समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व प्रमाणित नहीं होता | इन चारों बातों का प्रमाण के बिना सार्वभौमता, अखण्डता प्रमाणित नहीं होता | यही ज्ञानावस्था की विशेषता है | मानव के अलावा और किसी में इस प्रकार की सम्भावना अर्थात चारों प्रकार से सम्पन्न होकर के जीना बनता नहीं | इस आधार पर मानव को ही बदलना आवश्यक है | मानव ही बदल करके सार्वभौमता, अखण्डता प्रमाणित करेगा | अखण्डता विधि से समाज का व्यवस्था होना, फलस्वरूप अखण्ड समाज व्यवस्था सम्पन्न होना यही सार्वभौमता है | अखण्डता विधि से मानव चेतना का अध्ययन स्वीकृति, प्रमाणित होने की इच्छा का होना, सार्वभौमता विधि से जीने की तत्परता होना फलस्वरूप न्याय, धर्म, सत्य प्रमाणित होना होता है | यही संविधान का आधार है | न्याय विधि से अखण्डता; समाधान,समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व पूर्वक सार्वभौमता का प्रमाण परम्परा होता है | इसी सम्भावना के रूप में विकल्प प्रतिपादित है | इसे हर व्यक्ति अध्ययन कर सकता है, समझ सकता है, जी सकता है, प्रमाणित कर सकता है |

जय हो, मंगल हो, कल्याण हो |

- ए. नागराज | प्रणेता एवं लेखक | मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) | दिव्य पथ संस्थान(भजनाश्रम) | अमरकंटक | जिला-अनूपपुर(म. प्र.)